नं. ले. ३५४५५
ग्रं. सं. ~~५५५~~ ५७३
९०-४-५
८५०

श्रीसीताराम चरण चिन्ह
भाषा दोहा चौपाई

श्रीसीतारामोजयति ॥ सोरठा ॥ वंदौंगुरुपदधूरि परमसरीभवकंजहरन ॥ सुलभअमलअतिरूरि जेनलहैं
हिंतेभाग्यहत ॥ १ ॥ वंदोसोमुनिराय अंकुरुजिनप्रगटकिय ॥ गुरुसौरभसुचिपायसंतभृंगकुलसनभए ॥ २ ॥
वंदौसंतअनूपविनकारनजेपरहित ॥ जीवपरतभवकूपकरिकरुनाजेकरगहत ॥ ३ ॥ प्रनमोसंतसुजान
जेपरहितकरैंअतिप्रबल ॥ तिनकीकृपानिदानकरैंप्रबंधनबुद्धिबल ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ तिनकैंसंतचर
नकरजोरी ॥ करहुविनीतविमलमतिमोरी ॥ अलंकारकछुछंदनजानो ॥ केवलसंतचरनबलमानो
॥ श्रीगुरुचरनकमलउरआनी ॥ चरनचिह्नकछुकहौंबखानी ॥ दोहा ॥ एकसमयासुभदिनसुभ [illegible]
आसनआसीन ॥ सिष्यसतीसनसमतिअतिजाइदंडवतकीन ॥ चौपाई ॥ बोलेवचनजुगलकर
जोरी ॥ अतिअपारनहैसमतिहिंतोरी ॥ नाथप्रसकछुपूछनचहऊं ॥ कहौंजोप्रभुअनुमासनलहऊं ॥
प्रभुपदकमलजिनहिंसुतिगावहिं ॥ उमासहितसंकरजेहिध्यावहिं ॥ जिनहिंनाथनिसदिन
नुमध्यावतु ॥ तिनकरआकृतिवरनसुनावतु ॥ जाकरअसगुनआहुतिवरना ॥ उपमानोजैसीजेहि ॥ ॥ ॥

चरणा॥ कृपासिंधु मम कृत दुखभारी॥ जेहि सुनि भवसंभव दुखजारी॥ सुनत सतीसन की प्रियबानी॥ विनय
विवेक भक्ति रससानी॥ लोमस मन बोलत निगई॥ वरनि सतीसन भाग बड़ाई॥ सुनिष्ठ तचरन चिन्तन नृपा॥
परनसहित मैं कहेउ नृपा॥ प्रथम हि कहौं नाम पदलक्षन॥ धरत ध्यान तिय सदा विचक्षन॥ आदि हिंमर
त्य चिह्न प्रभु चरना॥ मत्स्याकार संत सुभ वरना॥ मत्स्य चिह्न पद वेद प्रसंसा॥ सगुन सकल जग जा के
अंसा॥ मत्स्य उभय गुन सोभन करना॥ रिद्धि दुष्ट नासि विधा करना॥ दूजे अमी कलस पद भ्राजा॥ अ
मी धानि रुज गज मृगराजा॥ तीजे अमर धंचंद्र को अंका॥ मानो दुति पानि थि को वंका॥ जो ध्यान कर
अ के पद भ्राजै॥ सो इमदन रिउ भालविराजै॥ याको ध्यान करत मनमाहीं॥ वंदनीय सो सब जग माहीं
चिह्न चतुर्थ त्रिलोक लोवै॥ त्रिगुन मयी जो सृष्टि खिनावै॥ ता को ध्यान करत पद तल का॥ जनम मरन तें
होइ विमुक्ता॥ पंचम अंबुज कला पद राजै॥ अरुन कमल पद तल अलि भ्राजै॥ स्याम वरन पद चिह्न
नि जोई॥ सकल फल नकर कास्य सोई॥ फल गुन चरन हिं वस जिन के॥ सकल मनोरथ पूरन नि

नके ॥ छठै धनष कर चिन्ह विराजै ॥ अरु नवीन सुर प्रति धनु लाजै ॥ सकल धनुष कारन नाना ॥ धनु
षअंक सो इष्ट जन जाना ॥ धनुष जुक्त पथ्यान जु साधै ॥ काम आदि षल ता हि न बाधै ॥ सप्त मगो पद
अंक लसोई ॥ तासु अंस मे सुरभी होई ॥ गो पद जुत प्रभु पद हिय जिन के ॥ सकल काम ना पूरन ति
नके ॥ आठउ संष अंक को अति सुंदर ॥ अरु नव लक्षन पर मन हंस वर ॥ संष अंक प्रभु पद नो ध्या
वै ॥ तिन के निकट दुष नहिं आवै ॥ नव रूं प्रभु पद दा स मता ॥ जो के अंस जगत सत्ता ॥ पो को ध्या
न करत नित जोई ॥ तिन कर विघ्न कबहुं ना होई ॥ पद्मा नासु को छोड़ि न देनी ॥ मन हुंगु लाल भरी
सिय बेनी ॥ दस रूं पीत बिंदु पद सोहत ॥ प्रेम बा न लषि मि पद मन मोहत ॥ पद्मा नासु निरंतर का
नहुं ॥ अवनि सु अन ठिग सुर मा नहुं ॥ पा के ध्यान मगन मन होई ॥ प्रभु पद प्रेम लहै जन सोई ॥
एकादस षट को न चिन्ह पद ॥ भिन भिन सब स्थान ने दद ॥ अंग नील अरु सेत स्याम छवि ॥ अंग
नपीत षट वरन कहत कवि ॥ एक वरन सित षट को ना ॥ प्रभु पद सहं सो रत आसि लो ना ॥ मनहुं के
तु अंस तनय नि सुत ॥ दैत्य पक्ष सुर पक्ष भो मजुत ॥ एस वंश मिलि भए यक ठाहीं ॥ उदय की न्हें ॥२॥

कलश

चिमंडलमाली ॥ प्रभुवटगुनएहि भेकवखाना ॥ जासोंनामभरमभगवाना ॥ अतिप्रसिद्धसवनग
मतेंनाता ॥ चिंतकजनकहेंनवनिधिदाता ॥ दासपरनचंदविराजै ॥ प्रभुपदपदमहंसोभाक्राजै ॥
सेतवरनअरुसवेदप्रसंसा ॥ चंदुतीराजाकेअंसा ॥ परनसिजुतपदजोध्यावै ॥ तीनितुतापनमिनृहि
सतावै ॥ लखिनेरतौजनमदंडकोअंका ॥ रूपत्रिभंगीअतिसोबंका ॥ गाएअसतेंभयजमदंडा ॥ सोणा
राजै५ एरविसुअनप्रचंडा ॥ स्यामवरनप्रभुचरनविराजै ॥ जेहिबरनतसारेलाजै ॥ उपमातासुकहेंनिनजोता दंडति५
अरुनकमलपरजनुफनिसोता ॥ याकेध्यानमगनमनहोई ॥ जमभयसपनेहुंलखैनसोई ॥ अ
रुचनुरदसभिखलीराजै ॥ जासुअंसतीनिलोकनलाजै ॥ सेतअरुनअरुस्यामसरावै ॥ तिरछी
तीनिअधिकछविछावै ॥ उपमातासुकहेंगनिदेनी ॥ अरुनसिवतेंधसीत्रिवेनी ॥ यहिछविमि
तंमनजाकरखचै ॥ त्रैगुनमयमायानेंबचै ॥ पंचदसमहिनिअंकलहदेसा ॥ अवनीभईनासतनव
लेसा ॥ जाकरगुनवरनतमुनिराई ॥ भएमगनतननहुधिबिसराई ॥ ननउलकितमुखगदगदबानी ॥
कहेउसिष्यअधिकारीजानी ॥ चतुरकोनअहेतिरंजनिवर ॥ मध्यपीतघनस्यामसेनतर ॥

॥२॥ ॥ अविरल भक्ति मोद सो पावै ॥ पावन वीना अंक विराजै ॥ जाके अंस सुभै सब साजै ॥ अति विचित्र सु
सरि षि मन मोहा ॥ रंग मलंग न तिषि सोहा ॥ विनय प्रेम रस कीरति गाया ॥ प्रभु पद अंक तें वीना पा
या ॥ करता फिरत गुन गान विसारद ॥ जीवन मुक्त भए मुनि नारद ॥ वीना अंक ध्यान रत जेई ॥ कीर्तन
भक्ति तिन तिन प्रभु देई ॥ सोऽहं चिह्न कहे मैगारी ॥ सुमिरन जिन हिं लभ्य गुरु ई ॥ इन की महिमा अगम
अपारा ॥ श्रुति सारद नहिं वरनै पारा ॥ इति श्रीरामचरणचिह्न ॥ अथ सनद सिन अंक सुरा
सेषा मतेशा विधि विधि गाए ॥ मैं कछु कहउं सुमति अनुरूपा ॥ चरन चिह्न गुन अमित अनूपा
प्रथम हिं स्वस्तिक वेद वखाना ॥ जाके अंस सकल कल्याना ॥ सो छवि लषि यि मन अनुरागो
॥ अरुन कमल विच मन हुं परागा ॥ स्वस्तिक अंक निरंजन जिनके ॥ सदानंद परि पूरन तिनके ॥
दूसर अष्ट कोन पद सोहा ॥ सो विलोकि धनपति मन मोहा ॥ ताकर ध्यान निरंतर कीन्हा ॥ धनप
ति पद वीने तिन प्रभु दीन्हा ॥ आठो वरन सकिन अति लोने ॥ अष्ट सिद्धि के आठो कोने ॥ ताको ॥३॥

ध्याननिरंतरजाके ॥ सिद्धीसकलबसैंयहताके ॥ तीसरछत्रजोवेदप्रसंसा ॥ छत्रादिकसबनाके अंसा ॥ याकेध्यानवरनमनदृढ़ज ॥ पश्चिमदिसिकरअधिपतिभएउ ॥ तेनछत्रप्रभुपदम
हँध्यावत ॥ मनबाँछितफलचिंतकपावत ॥ चौकलपवृक्षपदसोभित ॥ जोसुरपतिअहिसुरप
तिमोहित ॥ हरिनवरनप्रभुपदमहँभखा ॥ जाकेअंससकलसुरलखा ॥ सुरपादपजुतप्रभुपदध्या
वै ॥ प्रनकामसुपुरुषफलपावै ॥ सकलनेजकरकारनजोई ॥ चक्रचिह्नप्रभुपदमहँसोई ॥ चरनर
वरनसबनगप्रतिपालै ॥ जोकरसंतद्रोहनेहिघालै ॥ चक्रचिह्नयहपंचमगाथा ॥ सुनर
हुसुतीक्षनतासुप्रभाथा ॥ सबपदअंकबसैउरजिनके ॥ चारिपदारथकरतलतिनके ॥ क
रएँनवमालाभदसोई ॥ असनसकलमासोंहोई ॥ जवमालाप्रभुपदमहँजोतन ॥ अंतनपर जग३
नातिनकेसोहन ॥ जधरेबलबिप्रभुपदमाती ॥ बिभौसकलजाकरजगमाहीं ॥ एसपदमद
क्षिणलक्षन ॥ जानहिंनेप्रभुध्याननिचक्षन ॥ प्रभुपदमहँजेरेबाध्यावत ॥ बलपौरुषधन

पद१

॥४॥ नविधापावत ॥ अरुनधुजापदवेदप्रसंसा ॥ पटविसेषसवजाकेअंसा ॥ जेअंगौंउरमहँनिजधारा ॥ नि
नकहँभवनहिंकछुसंसारा ॥ नवएँवत्रचित्रपदसोई ॥ मनिविसेषसवजातेंहोई ॥ कीलनमुक्तचा
रुअंगाकारा ॥ [redacted] ॥ स्वरावरावन्मातिनीखन
धारा ॥ नातनअंकपदभावैजाही ॥ ताकेपायपखारनिलाही ॥ दसमचित्रपदअंकुसजोई ॥ अवधा
तुकरकारनसोई ॥ स्यामवरनछविछुनिअंसभावै ॥ मनमतंगकुंभसकरिराखै ॥ याकोध्यानक
रतनरजोई ॥ पावनठनिपदवीकहँसोई ॥ एकादसलक्षनपदराजै ॥ पदमअवदलअनिछविर
छाजै ॥ अरुनवरनसवेदप्रसंसा ॥ सकलपुरुषअगहेजेहिअंसा ॥ पदमअंसयतसिधसर
जाना ॥ प्रलयअंतजोविधिअस्थाना ॥ जाकोमनयाकेरससमै ॥ प्रभुसरूपताकेमनभासै
स२ द्वादससायकअत्रविचित्रा ॥ जाकेअंसेकलजगअत्रा ॥ स्वरापंचसोहनपदलक्षन ॥ सोइधा ॥४॥
नकरुनासविचक्षन ॥ याकेध्यानमगनमनजिनके ॥ वचनप्रसिद्धसदारनिनके ॥ तेरहौंपु

निरुपम अंग बखाना ॥ जास्तुअंसतनेंरातननाना ॥ अतिविचित्ररथअंकजोधा ॥ अव्याहतगतिनिजें
मकपावन ॥ अंकचतुरदसकुटलुमंडन ॥ जाकेअंससकलजगमंडन ॥ तेमवरनामिविंबसोहावा
लतनसुचिंतकमवलप्रभावा ॥ पंचदसौंसिंहासनचरना ॥ तनजनितचामीकरवरना ॥ जाकेअंस
सकलजगव्यासन ॥ याकोध्यानप्रकलषलनासन ॥ दक्षिनपदजोअंबुजकासा ॥ सोऽसअंसम
रचिलपरगासा ॥ जासोंनामप्रगटयहसोई ॥ याकेध्याननेंसममतिहोई ॥ पदअंगुष्टमूलभवलस

२४८ न ॥ सप्तदसौंसोरअंकसतीसन ॥ जवलस्थलनपदध्यावतजोई ॥ विषयविवसकवतंनहितोई
अष्टदसौंपदनिरकीरेखा ॥ पुरुषसोअंकुसवेषा ॥ पुरुषारथजहंलगिजगमाहीं ॥ सवकरकानप्र.
न३ भुपदमाहीं ॥ पुरुषवेषमंदुकरिगतई ॥ अतिसयपुरुषारथकोलतई ॥ सोऽसअंकनेप्रभुपदधां
सर ॥ नेसियजनकेदाहिनपाएं ॥ दक्षिनअंकअष्टदप्रभुपद ॥ नेसियजनकेवासवेदवद ॥ सोहा ॥ स
हससेसनहिंकहिसकहिं ॥ सरन्यामनिजनुसारयकयकंठनगानअमित ॥ तवितवप्रीतिपुर के२

॥५॥ नीत कहे ऐंनात निजगुप्त मन ॥ राम भगत सु भीत कहवनाति अतिप्रीतिलषि ॥ चौपाई ॥ रघुव
रचरनकमलरतिनाही ॥ चरनचिह्नजनकत्वननाही ॥ सुनतसुमित्रप्रभुपदप्रेमा ॥ मगनभ
एउनिमिलतिनिधिनेमा ॥ बोलेवचनारूपदसीसा ॥ धन्यधन्यबुधधन्यमनीसा ॥ अतिहारत
मैअवधनाथा ॥ नाथकृपाअवभएसनाथा ॥ अबकीनदेखनजाई ॥ परमसुप्रेमीमिलेरघु
वर ५ ईनवमुनिबैठाईएलासाचरनचिह्नलषिमनमाना ॥ दोहा ॥ तीनअवीसमुनीमतवारन चरनर वर ४
पद ३ तिजानि ॥ वसतहृदयासियरामचिह्नसकलगुनखानि ॥ चौपाई ॥ वाइअवीसमुनीमतनीकी ॥ वा
रवारमुनिचरननपरेऊ ॥ दोहा ॥ भरिलोचनमुनिग्रंथतें अहसंचितमतजानि ॥ वरनेभाषाकछुकमेच
रनचिह्नजनषानि ॥ इतिश्रीअगस्त्यसंहितोक्तसंक्षेपश्रीसीतारामचरनचिह्नवर्णनंसंपूर्णं ॥

॥५॥